RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 18 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 6 अक्टूबर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

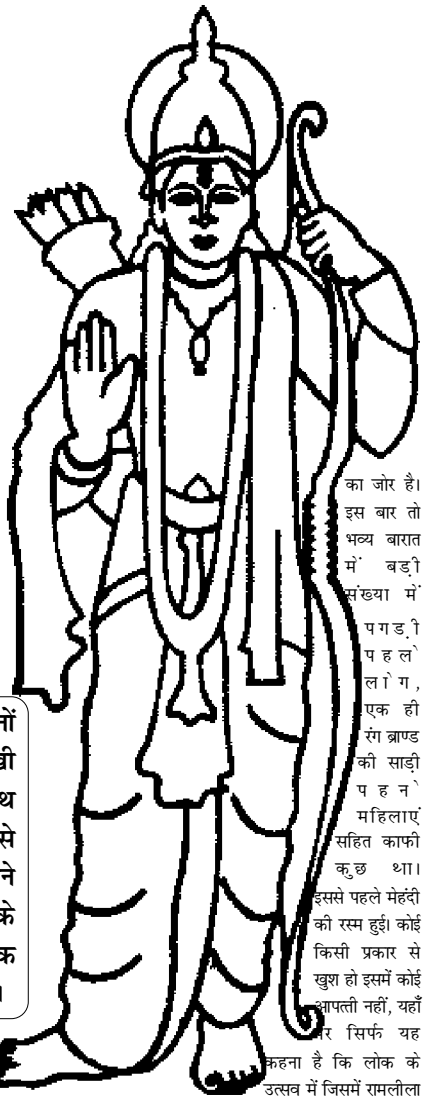

रामलीला को खूब रंगने लगे हैं

लोक उत्सवों के बदलते ढब

रामबारात से पहले मेहंदी में जुटी भीड़

रामलीला ही नहीं, हमारे तमाम आयोजनों में जाने-अनजाने जिस प्रकार से देखादेखी प्रयोग किये जा रहे हैं वह इनके साथ छेड़छाड़ ही है। लोक उत्सव कम से कम साधनों में भी समाज को जोड़ने का काम करते हैं जबकि दिखावे के लिये हो रहे प्रयोग तत्काल आकर्षक लगते हैं लेकिन बाद में टूटन देते हैं।

कार्यालय प्रतिनिधि

भगवान राम के चरित्र को लेकर दुनियाभर में रामकथा और इसके प्रसंग सुनाए और गाए जाते हैं। नाट्य रूप में इसको दर्शाने के अलावा अनुष्ठान के रूप में भी रामलीला को मनाया जाता है। बात यदि पर्वतीय रामलीला अर्थात उत्तराखण्ड में होने वाले रामलीला मंचन की करें तो यह दुनिया में अद्भुत है। अपनी गीत नाट्य शैली की विधा के कारण इसमें राग-रागनियों की छटा और लोकधर्मिता दिखाई देती है। रामायण के साथ लोक को जोड़ते हुए इसकी लीला में बेहतरीन प्रयोग हुए हैं परन्तु जिस प्रकार का प्रयोग शहरों में होने लगा है वह इस लीला को पूरी तरह रंगने पर आतुर है।

रामलीला ही क्या पहाड़ के अन्य उत्सवों के ढब भी बदलने लगे हैं। जिन उत्सवों पर लोग थिरकते थे उनका नाम पिछले 5-7 सालों में 'महोत्सव' कर दिया गया है और उन्हें एक आकार विशेष बनाते हुए जिस प्रकार का होने लगा है वह सब दिखावे की क्रान्ति कहना गलत नहीं होगा। रामलीला के सपाट मंचन में जोड़-जुगाड़ कर ग्रामीण परिवेश से लोग जुड़ा करते थे और एक अनुष्ठान के रूप में उसे आज भी जगह जगह मनाया जाता है। समय के साथ इसमें संसाधनों का जुड़ना और रामलीला कमेटियों का फलना-फूलना खुशी की बात है। भगवान श्रीराम की भव्य झांकी निकालना भी उनके प्रति आस्था को दर्शाता है लेकिन इस अनुष्ठान को इतना गाढ़ा कर देना कि आम आदमी 'टापता' रहे, तो सोचनीय होगा।

प्रदेश के बड़े शहरों में विशाल पुतलों का प्रदर्शन, भव्य आतिशबाजी, सजावट का प्रदर्शन आकर्षित करता है लेकिन अब तो इसमें लगातार जो जुड़ता चला जा रहा है वह पूरी रामलीला मंचन का तरीका बदलने को दिखाई दे रहा है। हल्द्वानी महानगर में पहाड़ की रामलीला का प्रदर्शन कुछ जगह परम्परागत रूप से होता है जबकि मुख्य बाजार में दिन की रामलीला के रूप में आरम्भ हुई लीला सम्वाद में होती है और खुले मैदान में होने वाली इस रामलीला मंचन ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा है। रामलीला मंचन की पुरानी बातें तो रही नहीं, बस इसकी तड़क-भड़क अति होने लगी है और अतिथियों की भीड़ बढ़ती जा रही है। पिछले सालों में राम बारात सहित जिस प्रकार के आयोजन हो रहे हैं उसमें स्व-प्रदर्शन का तड़का ज्यादा होने लगा है। तमाम नेता और दिग्गजों का जुटना, सोशल मीडिया पर पर अपना प्रचार, रील बनाकर नव प्रचार का जोर है। इस बार तो भव्य बारात में बड़ी संख्या में पगड़ी पहले लोग, एक ही रंग ब्राण्ड की साड़ी पहने महिलाएं सहित काफी कुछ था। इससे पहले मेहंदी की रस्म हुई। कोई किसी प्रकार से खुश हो इसमें कोई आपत्ती नहीं, यहाँ पर सिर्फ यह कहना है कि लोक के उत्सव में जिसमें रामलीला भी शामिल है उसे स्व-प्रचार की बजाय लोक की रीति और उसे संवारने का उल्लास हो। इसमें देखा-देखी प्रयोग मतलब इनसे छेड़छाड़ ही तो है। कम साधनों में समाज को जोड़ना जरूरी है, तत्काल का आकर्षण टूटन देता है।

भारत के मीलपत्थर

क्या था कृष्ण के जीवन का उद्देश्य

सूर्यकान्त बाली

कृष्ण को समझ पाना खुद में एक विकट समस्या है। पौराणिकों द्वारा विष्णु के दस या चौबीस जितने भी अवतार माने गए हैं उनमें किसी को कलावतार तो कुछ अंशावतार माना गया है। यहाँ तक कि राम को विष्णु का तीन चौथाई माना गया। यानी विष्णु की सोलह कलाएँ मानी गई हैं तो राम को बारह कलाओं का स्वामी माना गया है। वाल्मीकि तो राम को विष्णु का अधीश ही मानते हैं- विष्णोरर्ध महाभागः। पर कृष्ण को पूर्णावतार माना गया है। उनकी सोलह कलाएँ मानी गई हैं। परम्परा उन्हें स्वयं भगवान मानती हैं- कृष्णस्तु भगवान स्वयं।

नाम पर जाइए तो अपको कृष्ण के जितने नाम मिलेंगे उतने ही शायद ही किसी अवतार के मिलें। राम को माँ कौशल्या, पिता दशरथ और वंश रघुकुल आदि के कारण मिले नामों को अलग कर दें तो उनका स्वतंत्र प्रसिद्ध नाम बस एक ही मिलेगा- पुरुषोत्तम या मर्यादा पुरुषोत्तम। पर कृष्ण के पास नामों का अम्बार लगा है। गिरिधर, गोपाल, गोविन्द, मुरारी, केशी, केशव, नटवर, योगेश्वर और न जाने कितने। संस्कृत के एक कवि को तो कृष्ण के इतने सारे नामों ने इतना मोह लिया कि उसने एक वस्तु या व्यक्ति के अनेक नामों को रूपातिप करने वाले उल्लेख अंलकार के उदाहरण के लिए एक श्लशोक में कृष्ण के नामों की झड़ी लगा दी। सहस्त्रनाम शिव का भी है और कोई कवि और आजमाइश पर उतर ही आए तो राम जैसे महागम्भीर नायक का भी सहस्त्रनाम पेश कर देगा। पर जो विविधता, खूबसूरती और संगीतात्मकता कृष्ण के सहस्त्रनाम में है वह कहीं और कहाँ? उसे भक्तों ने सीधे-सीधे सहस्त्रनाम ही कह डाला है। रोज जप करेंगे तो (भौतिक) फायदे मिलेंगे, यह लालच भी दे दिया है। क्यों? कृष्ण को खुद भगवान जो मान लिया गया है।

नामों की ऐसी विविधता क्यों? जाहिर है इसलिए कि कृष्ण ने इतने सारे चमत्कारी काम कर दिए कि उनमें से हरेक काम कृष्ण को नया नाम दे गया। काम तो राम ने भी किए, पर थोड़े से। ताड़का का वध कर दिया। अहिल्या की पाषाणमूर्ति में जान डाल दी और हद छू ली तो शिव का धनुष तोड़ दिया। इसके बाद राम के जीवन में सिर्फ एक ही चमत्कार घटा जब उन्होंने अकेले ही खर-दूषण समेत बारह हजार सैनिक मार डाले। पर जब इसकी तुलना इस तथ्य से करें कि महाभारत युद्ध में अकेले भीष्म रोज दस हजार सैनिकों का वध दस दिन तक करते रहे तो राम के चमत्कार को नमस्कार करने को मन नहीं करता। युद्ध में मूर्छित लक्ष्मण को जिलाने का श्रेय राम को नहीं हनुमान को है। अगर विभीषण अमृत कुम्भ का रहस्य न खोलता तो पता नहीं रावण का वध कब होता, होता या न हो, या अचानक पेट में बाण लग जाने से ही हो जाता। पर राम ने जितने भी चमत्कार किए, रहीम के इस दोहे के हिसाब से किए कि 'देनाहर कोई और है, भेजन है दिन रैन, लोग भरम हम ये करें, तातें नीचे नैन।' यानी राम ने हर काम इतनी गम्भीरता से किया कि मानो कह रहे हों कि आरे, इसमें मेरा क्या बड़प्पन है। वजनी शिव धनुष हाथोंहाथ उठा कर साध लिया तो इस अन्दाज में कि बूढ़ा, पुराना, जीर्ण धनुष था, उठा लिया तो कौन सा अजब कर डाला।

पर कृष्ण के जन्म से लेकर निर्वाण तक न जाने कितने कामों का चमत्कारी सम्पादन हुआ है। काम भी कितने अलग तरह के और हर काम कितने रंग-बिरंगे तरीके से, मानो कह रहे हों कि देखा, यह कर डाला है मैंने। एक नाटकीयता, एक चुस्ती, एक चित्रकर्म हर काम के साथ जुड़ा है। तय कर लिया कि आज शिशुपाल को मारना है तो कहा कि शिशुपाल अपने हिस्से के माफीशुदा अपराध पूरे कर लो, निकाल लो गालियाँ, कर लो मेरा अपमान। पर जैसे ही क्षन्तव्य अपराधों की संख्या पूरी हुई, अपने सुदर्शन चक्र से उसका काम तमाम कर दिया।

कृष्ण के हर चमत्कार का छबीलापन लाजवाब है। जन्म हुआ तो कारागार में पता नहीं कैसे अचूक योजना बना रखी थी नन्द और उसके यादवों ने कि जेल में पैदा लड़के को निकाल गोकुल गाँव तक पहुँचाना और वहाँ यशोदा की सद्योजाता कन्या को जेल में जच्चा देवकी के पास पहुँचा देना- हर काम फूलप्रूफ तरीके से हो गया। इसके बाद आती है जाटकीयता से भरे चमत्कारों की झड़ी। पूतना को मारा। उसके स्तनों पर पुते जगह को चूस कर। जहर क्या चूसा, उसकी सारी ऊर्जा चूस ली और निष्प्राण कर डाला। माँ ने ऊखल से बाँधा तो ऊखल समेत घिसटते-घिसटते दो पेड़ों में उसे फंसा कर पेड़ ही जड़ से उखाड़ डाले। बकासुर को उसके बगुले के रूप में चीरकर मार डाला तो अघासुर को उसके अजगर आकार में खुद को गले में फँसाकर निर्जीव कर दिया। गधे के रूप में आए धेनुकासुर को उसकी दुलत्ती से आसमान में उछालकर मारा और कालिया नाग के फणों पर अपनी ही बाँसुरी की धुन पर नाचते-नाचते

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

छात्र संघ का मकसद

उत्तराखण्ड में छात्र संघ चुनाव जोश-जुनून के साथ सम्पन्न हुए हैं लेकिन कुछ कालेजों में छात्र गुटों के बीच आपसी झगड़े और तनाव अशान्ति का माहौल बना गया। हल्द्वानी, रुद्रपुर, काशीपुर स्थित बड़ी छात्र संख्या वाले कालेजों के अलावा पहाड़ के कालेजों में भी छात्र नेताओं ने जिस तरह से चुनाव को लेकर कमर कसी वह नई बात नहीं है। छात्र संघ चुनाव की परम्परा रखी ही इसलिए थी कि लोकतन्त्र का गणित युवा समझ सकें और इन्हीं सीखों के साथ कई छात्र नेता काबिल जनप्रतिनिधि के रूप में समाज में जनकल्याण के निर्णय ले रहे हैं। कालेज राजनीति से निकले कई छात्र प्रदेश के अलावा दूसरे प्रदेश व देश की राजधानी दिल्ली तक में अपनी धाक बनाए हुए हैं।

छात्र संघ की खूबसूरत परिकल्पना के पीछे यह भी कारण था कि हमारी युवा पीढ़ी चुनाव प्रक्रिया को समझे और ऊर्जावान नेतृत्व करने को आगे आएं। पहले से अधिकांश यह होता था कि अपने विषय में विलक्षण और क्षमतावान को उनके साथी निर्विरोध चुन लेते थे ताकि वह कालेज में पठन-पाठन के माहौल के अलावा विद्यार्थियों की ओर से बात रखने वाला विचारवान नेतृत्व हो। लेकिन धीरे-धीरे हुआ यह कि छात्र-छात्राओं का नेता बनने के लिये होड़ मचने लगे क्योंकि छात्र नेताओं की ताकत और दखल बढ़ता चला गया। कहीं-कहीं तो अराजकता तक होने लगी। इन सारे हालातों से निपटने के लिये लिंगदोह समिति की सिफारिशें लागू कर दी गई जिससे छात्रसंघ चुनाव में कूदने वाले नेताओं पर काफी अंकुश लगा। इसके बावजूद राजनीति का अमल करने वाले यह भूल बैठे हैं कि वह नियमों से बंधे हैं। चुनाव लड़ना मतलब यह नहीं है कि वह तय कानूनों को तोड़ें और स्वस्थ माहौल को खराब करें।

वर्तमान के दौर में जब शिक्षण-प्रशिक्षण की विधियां बदलती जा रही हैं और दुनिया बहुत आगे की ओर जा रही है। ऐसे में हमारे युवाओं को भी सजग होना चाहिये क्योंकि सरकारी महाविद्यालयों में आम परिवार के बच्चे पठन-पाठन को आ रहे हैं। इसमें उन बच्चों की संख्या ज्यादा है जो खर्चीले संस्थानों में नहीं जा सकते। इसलिये छात्र राजनीति को मकसद ईमानदार हो।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

छेड़छाड़ पर भारतीय को कारावास

सिंगापुर। एक भारतीय नागरिक और सिंहगापुर के स्थायी निवासी को शॉपिंग मॉल के नर्सिंग रूम में एक महिला से छेड़छाड़ के मामले में चार साल के कारावास और छह बेत मारने की सजा सुनाई गई। 46 वर्षीय अंकित शर्मा को दोषी ठहराते हुए यह सजा हुई।

नेपाल में नये मंत्रियों की शपथ

काठमाण्डू। नेपाल में हिंसा और तख्ता पलट के बाद नवनियुक्त प्रधानमंत्री सुशीला कार्की की अन्तरिम सरकार में नये मंत्रियों की शपथ का आयोजन हुआ। नेपाल में सभी से देश को संवारने और तोड़फोड़ से बचने को कहा गया है।

मानवीय पीड़ा के युग में प्रवेश कर चुके

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने वैश्विक शान्ति और प्रगति पर मंडरा रहे खतरों के बीच एक ऐसी दुनिया बनाने की अपील की जिसमें सत्ता पर काननू का शासन हावी हो और देश अपने स्वार्थों के लिये संघर्ष करने के बजाए एकजुट होकर आगे बढ़े। संयुक्त राष्ट्र के वार्षिक महासम्मेलन में उन्होंने कहा कि हम उथल-पुथल और निरन्तर मानवीय पीड़ा के युग में प्रवेश कर चुके हैं। शान्ति और प्रगति के प्रयास उदासीनता के बोझ तले दब रहे हैं।

कतर में यूपीआई से भुगतान शुरू

नई दिल्ली। अब भारतीय यात्री कतर में भी यूपीआई से भुगतान कर सकेंगे। एनपीसीआई इंटरनेशनल पेमेंट्स लि. ने कतर नेशनल बैंक (क्यूएनबी) के साथ मिलकर इस सुविधा की शुरूआत की है। इस पहल के तहत क्यूएनबी से जुड़े दुकानदार और नेटस्टार्स के भुगतान समाधान का इस्तेमाल करने वाली पॉइंट ऑफ सेल मशीनों पर यूपीआई क्यूआर कोड से भुगतान किया जा सकेगा।

कश्मीर मामला दखल नहीं : अमेरिका

न्यूयॉर्क। अमेरिकी विदेश विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि कश्मीर भारत और पाकिस्तान के बीच का सीधा मुद्दा है, और अमेरिका की इस मामले में दक्षिण एशिया के दो पड़ोसियों के बची दखल देने की कोई रुचि नहीं है।

नेतन्याहू के प्रवेश पर लगी रोक

जलुब्लजाना। स्लोवेनिया ने कहा कि वह अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अपने संरक्षण को रेखांकित करने के लिए इजराइली प्रधानमंत्री बेजामिन नेतन्याहू के यूरोपीय संघ के देश में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा रहा है।

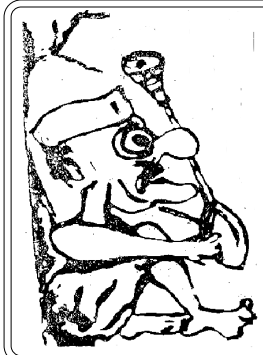

फसक

दाज्यू, जिसकी कल्पना न थी वह भी हो रहा ठैरा

धकिया-धकिया के आगे आ जाते हैं बल

दाज्यू, रामलीला का मस्त महीना है लेकिन क्या करें जिसकी कल्पना न थी वह भी हो रहा ठैरा। न सावन हरा न भादो सूखा। कैसे चलेगी दुनिया? हर कोई मुदगर घूमाता आगे आना चाहता है। इसके लिये जूतम पैजार भी मीठी लगने लगी है।

यूट्यूबर सौरभ जोशी भी जमाने में खास ठैरा। इस बालक ने कहानी बना और बता कर भीड़ जमा कर ली है लेकिन फिरौती वाले इसे भी नहीं छोड़ रहे। भाऊ गैंग ने बालक से 5 करोड़ की मांग करते हुए गोली मारने की धमकी दे डाली है बल। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया। पेपर लीक प्रकरण भी जोर पर है। धामी ज्यू कह रहे हैं- 'नकल माफिया बख्शे नहीं जाएंगे।' देहरादून पुलिस ताबड़ तोड़ जाँच कर रही है बल। कांग्रेस ने तो आन्दोलन को लम्बा खींच डाला है। दाज्यू, सत्ता हो या विपक्षी लप्पू-झप्पू सब जगह ठैरे। धकिया-धकिया के आगे हा जातें हैं बल। क्या किया जाए?

देहरादून में दो बहनों का शोषण का मामला भी उछला है। नैनीताल जिले की बहनों का कहना है- 'नौकरी के नाम पर उनको बन्धक बनाकर शोषण हुआ।' मसले पर 11 नामजद आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच हो रही है। भगवान जाने क्या जो हो रहा है। छात्र संघ चुनाव में खूब घमाघम हुई। रुद्रपुर कालेज गेट में लात-घूंसे, फायर हुआ। काशीपुर में भी मार-कुटान होता रहा। दाज्यू, इस बीच हल्द्वानी में एक तम्बाकू फर्म में करोड़ों की गड़बड़ मिल गई बल। जीएसटी और टैक्स पता नहीं क्या कुछ होने ही वाला हुआ। चुगान और भुगतान ठैरा। -तुम्हारा भुला झकरुवा

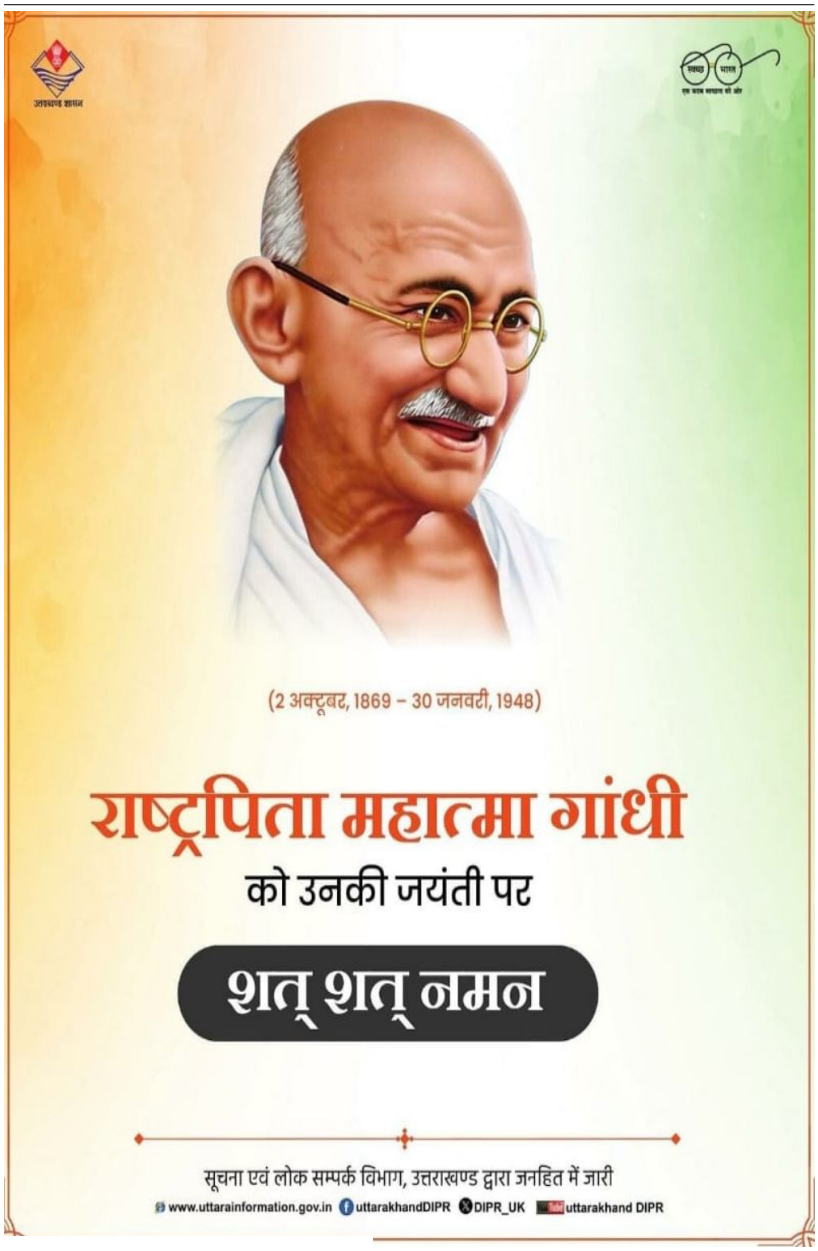

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

रीति-रिवाज

कपाड़ू धोये हां..... (कपड़े धो-धाकर रख देना)

जगदीश सिंह बजवाल

(आज से कुछ वर्ष पहले तक जब सुविधाएं कम और रिवाज और अपनापन ज्यादा था प्रत्येक समाज में चल रही छोटी से छोटी बातें भी दिलचस्प थीं। वह बातें नई पीढ़ी को अटपटी और चटपटी लगती हैं लेकिन उनकी सच्चाई में जाओ तो भोलपान और अपनापन है। ऐसी ही घटना जोहार समाज से जब अतीत में जोहारी शौकाओं के बारात में बाराती बनने के लिए बराती के कपड़े धोने की सूचना पूर्व मे ही सन्देश वाहक सभी के घर-घर जाकर दे देता था। जिसकी स्मृतियाँ लेखक के जेहन में हैं)

कुछ यादें दिल में आज भी हिलोरें लेती हैं। शादी विवाह के महिनों में गाँव में युवा लड़के-लड़कियों की शादी की तारीखें निश्चित हो गई हैं। माता-पिता बच्चों का पालन पोषण कर हाथ पीले कर देना अपनी अन्तिम जिम्मेदारी समझता था।

गाँव का माहौल अलग-सा दिख रहा है, सभी प्रसन्न मुद्रा में लग रहे हैं। क्योंकि एक साथ इतनी शादियां गाँव में पहली बार हो रही है। जिन घरों में विवाह कार्यक्रम होने है वे लोग महीनों से तैयारी में लग गए, जिनके पास कुछ कमी पेशी वे अपने-अपने जुगत में लगे हैं। सभी ने आपसी सही तालमेल बैठाकर शादी की अलग-अलग तिथि भी निश्चित की है।

सर्वप्रथम शादी की तैयारी जिस घर पर एक हफ्ते बाद है। उनके घरों में कपड़े सिलने के लिए दर्जी आ चुका है। क्षेत्र में- अमरू, पद्दू, माना, मोहन, हरकू जो टेलर है अक्सर कपड़े सिलने वही लोग आते हैं, कुछ दर्जियों ने आगे पीछे के बारात का काम अपनी फुर्सत देखकर भी ले लिया है।

गाँव घरों में बरसात के बाद शरद ऋतु से आगे का माहौल खुशनुमा रहता है, मेला, त्योहार, शादी विवाह, पूजा-पाठ आदि उत्सव निरन्तर होते रहते हैं। उनमें शादी का उत्सव प्रमुखतया ही माना जाता है। लोग खूब मनोरंजन कर आनन्दित रहते हैं। इस बार गाँव में पाँच शादी का लगन कार्यक्रम है, सभी ग्रामीण अत्यधिक प्रसन्न हैं।

शादी के महीनों में दर्जी (टेलर मास्टर)का विशेष महत्व व मांग रहती है अमरूवा, पद्दू, मादू, लालू, माना, मोहन और भी दर्जी कुछ दिन पहले ही कपड़े सिलने हेतु उन घरों में पहुँते हैं जहाँ शादी सम्पन्न होनी है। दूल्हे के घर पर तो सभी परिवार के सदस्यों लिए ढेर सारे कपड़े सिलने पड़ते हैं, पुरूष परिधान- पेंट-कोट, पायजामा, वासकट, कमीज, स्त्रियों के लिए- घघौर-कमौल, खोंपी, और ब्लाऊज, फराक, सलवार सूट आदि जिसमें बारातियों के लिए सफेद टोपी महत्वपूर्ण है।

अब बारात के दिन मुँह के सामने आ चुकी है घर का बुजुर्ग मुखिया अपनी पत्नी से कहती हैं।

मुखिया- (पत्नी से) सुनो! 'नाती के शादी का एक सप्ताह रह गया है। किसी से कह दो, बारातियों के कपड़े धो कर साफ कर दें।'

पत्नी (सेठानी)- ठीक है, अभी चेतुवा को भेजता हूँ वही पूरे गाँव में जाकर बता देगा। (बुरतियानक कपार ध्वे दिया कौल)

चैतुवा- ठुलिमा, (बड़ी माँ) आ गया मैं। क्या काम है?

सेठानी- बेटा, चैतुवा अब हिमुवा की शादी सामने आ ही गया है गाँव में जाकर राठ में तथा नजदीक वालों को सभी छोटे-बड़े कहकर जबाब दे देना। जो बारात जाएंगे, कहना उनके कपड़े धो-धाकर रख दें।

चैतुवा- हाँ, ठुलिमा, मैं अभी जा रहा हूँ सभी को बता देता हूँ। जैसा आपने कहा है।

सेठानी- ठीक है, आकर बता देना हां।

चैतुवा- ठीक है।

चैतुवा- ओ चाची! मैं चैतुवा आपके घर।

चाची- बेटा चैतुवा क्या है?

चैतुवा- चाची, सेठजी का लड़का हिमुआ का बारात 4 गते को है चाचाजी का कपड़ा धो देना है।

चाची- बेटा चैतुवा, सेठ लोगों का बाराती निमंत्रण कैसे-कैसे हैं? बताना।

चाची - अपने राठ (सगे विरादरी) में सभी छोटे-बड़े पुरुष बाराती और सभी अन्य गाँव बड़े भाई राठ (बड़े भाई के परिवार का सदस्य) में एक बाराती जाएंगे।

चाची- ठीक चैतुवा। अच्छा है।

(चेतुवा पुरे गाँव में कपड़े धोने की सूचना देकर वापस आ गया है)

चैतुवा- ओ ठुलिमा (बड़ी माँ) मैं आ गया हूँ। जबाब सभी घर में हो गया है।

सेठानी- बैठ चैतुवा, ज्या-सातू (नमकीन चाय, भूना आटा) खाकर जाएगा। बेटा!

चैतुवा- ठीक है ठुलिमा। (अच्छा बड़ी माँ)

सैठानी- गरम चाय लाकर देते हुए, ले चेतुवा ज्या, सत्तू भी लेना हां!

चेतुवा- अच्छा, ठुलिमा (बड़ी माँ) जा रहा हूँ।

सेठानी- ठीक है चेतुवा।

बारात का दिन आ गया, सब रिश्तेदार दूल्हे के घर सज-धज कर पहुँचना शुरू हो गया है। दूल्हा का बड़ा भाई सभी को सगुन खाने हेतु अपने कमरे में बैठाते जा रहा है बाराती सगुन खाकर सफेद टोपी ओढ़कर बाहर निकल रहे हैं, आँगन में गाजे-बाजे की धूम मची है लोग छलिया के साथ नाच रहे हैं चारों ओर से महिला पुरुष बच्चे, युवा शादी का आनन्द ले रहे हैं।

मुन्ना- अरे किसन, आज गज़ब लग रहा है कहाँ से लाया पेंट-कमीज का कपड़ा भाई?

किसन- अच्छा, अलग अंदाज में, हाँ, पिताजी ने हीरालाल दुकानदार के वहाँ से ला दिया है।

मुन्ना- बहुत अच्छा, भाई मेरे पिताजी के पास तो रुपए नहीं थे। इसलिए पुराने पेंट -कमीज धोकर सिराने में तह करके ही पहना है। अब फिर कभी तेरे जैसे कपड़े लाऊँगा, दोस्त।

किसन- ठीक है, मुन्ना। अब बरात में चलते हैं।

मुन्ना- चलो, चले।

राजू- अरे तुम दोनों यहाँ क्या कर रहे हो? अभी तक बारात में गये नहीं।

तीनों दोस्त शादी में सम्मिलित होकर नाचते हैं कुछ ही लोग नये कपड़े पहने हैं और खूब नाचते दिख रहे हैं किन्तु सभी अपने पुराने कपड़ों को साफ स्वच्छ ढंग से धोकर पहने हुए है।

मुन्ना सभी के परिधान पर नजर दौड़ाते हैं जो शादी में नाच रहे हैं उनमें- युवा, बुजुर्ग, बच्चे सभी पुरुष वर्ग ही हैं लड़कियाँ, औरतें आँगन, छत के चोरों और से बारात देख रहे हैं लगता है औरतें अभी पुरूषों के समानता तक नहीं पहुँचे हैं समाज में भेदभाव बना है। मार्मिक हृदयस्पर्शी दृश्य, कपड़े की महत्ता अभावग्रस्त जीवन में हर एक व्यक्ति का नये कपड़े पहनने की सामर्थ भी नहीं था। जिस कारण रीति-रिवाज भी पुराने कपड़े धोकर ही स्वच्छता के साथ बाराती बनकर सम्मिलित होना है। आज उस जमाने की कुछ स्मृतियां मन-मस्तिष्क में हिलोरें लेती है। जो कभी न भूला सकने वाली यादें- 'कपाड़ू धोये हां' (कपड़े धोकर साफ स्वच्छ रख देना) सदैव याद आती रहेगी।

उत्तराखण्ड के 13 ग्लेशियर झीलों में स्थापित किए जाएंगे सेंसर

देहरादून। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने प्रदेश की 13 ग्लेशियर झीलों में सेंसर लागाने की जिम्मेदारी वाडिया हिमालय भू-विज्ञान संस्थान को दी है। कहा कि, शुरुआत में 6 सम्वेदनशील झीलों का सेटेलाइट एवं धरातलीय परीक्षण कर समेंसर स्थापित किए जाएं। उन्होंने कहा कि सम्वेदनशील झीलों की सम्वेदनशीलता किस प्रकार से कम की जा सकती है, इस दिशा में भी कार्य किए जाना है।

मुख्य सचिव (सीएस) आनन्द बर्द्धन ने वाडिया हिमालय भू विज्ञान संस्थान, जीएसआई, इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेसिंग, सेन्ट्रल वॉटर कमीशन आदि राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों के साथ लैण्ड स्लाइड न्यूनीकरण के सम्बन्ध में बैठक की। इस दौरान सभी वैज्ञानिक संस्थानों के साथ भूस्खलन न्यूनीकरण की समस्याओं के निराकरण पर चर्चा हुई। सीएस ने सभी वैज्ञानिक संस्थानों को प्रदेश के अन्तर्गत भूस्खलन सम्भावित क्षेत्रों का चिन्हीकरण कर एक प्रिडिक्शन मॉडल तैयार किए जाने की बात कही। कहा कि हमें एक इस प्रकार के मैकेनिज्म को तैयार किए जाने की आवश्यकता है जो सैटेलाइट इमेज और धरातल परीक्षण के बाद तैयार मॉड्यूल के आधार पर यह पूर्वानुमान लगा सके कि कितनी वर्षा होने पर किसी विशेष स्थान के भूस्खलन की सम्भावना है ताकि हम निचले स्थानों को खाली कर सुरक्षित स्थानों तक पहुँचा सकें।

ज्योतिष की बातें- 249

9 अक्टूबर 205 को शुक्र अपने मित्रग्रह बुध की राशि कन्या में प्रवेश करेगा, लेकिन कन्या शुक्र की नीचराशि भी होती है। इस समय शुक्र पर शनि की अशुभ दृष्टि भी रहेगी। अत: शुक्र निर्बल रहेगा। मन्त्रेश्वरकृत फलदीपिका के अनुसार वक्र केवल छठवें, सातवें व दसवें स्थान पर अशुभ होता है, शेष स्थानों पर शुभफल प्रदान करता है। साथ ही शुक्र मकर और कुम्भ राशियों के लिए योगकारक भी होता है। शुक्र विवाह, दाम्पत्य जीवन, कामेच्छा, काव्य, सौन्दर्य, वाहन, शारीरिक सुख, भोग, वस्त्र, आभूषण, रत्न आदि का कारक होता है। अत: अगले 25 दिन शुक्र अपने कारक विषयों में वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर व कुम्भ राशि के जातकों को अल्पमात्रा में ही शुभफल प्रदान करेगा। शेष तीन राशियों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

कोजागिर पूर्णिमा- यह पर्व अश्विन शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा, प्रदोष एवं निशीथ उभयव्यापिनी, तिथि में मनाया जाता है। तदनुसार सोमवार 6 अक्टूबर 2025 को कोजागिरी पूर्णिमा का पर्व मानाया जाएगा।

करक चतुर्थी (करवा चौथ)- कार्तिक कृष्णपक्ष चतुर्थी चन्द्रादय व्यापिनी तिथि में करवा चौथ का व्रत रखा जाता है। यदि दोनों दिन चन्द्रोदय में चतुर्थी तिथि न हो तो अगले दिन ही व्रत किया जाता है। तदनुसार शुक्रवार 10 अक्टूबर 2025 को विवाहित महिलाएं पति की दीर्घायु की कामना से करवा चौथ का व्रत सम्पन्न करेंगी।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 139

दुर्गोत्सव आदि का स्वरूप

गरबा व डांडिया ये पारम्परिक रूप से गुजरात के नृत्य हैं लेकिन अब पूरे महाराष्ट्र में तथा लगभग सम्पूर्ण देश में नवरात्रि के दिनों में गरबा और डांडिया होने लगा है। जो दुर्गा जी की स्थापना बड़े-बड़े पण्डालों में नवरात्रि के दिनों में पहले केवल बंगाल में ही होती थी आज वह दुर्गोत्सव सम्पूर्ण देश में व्यापक रूप से होने लगा है। गणपति स्थापना करके ग्यारह दिन उनका पूजन और फ़िर विसर्जन जो पहले केवल महाराष्ट्र में ही होता था आज वह सम्पूर्ण देश में व्यापक रूप से होने लगा है।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने महाराष्ट्र में सन् 1893 में हिन्दुओं को संगठित करने के लिए जो प्रबल राष्ट्रीय एवं धार्मिक भावना से प्रारम्भ किया था आज वह धार्मिक भावना को त्यागकर अव्यवस्था, ट्रैफिक में अवरोध उत्पन्न करने, कान फोड़ने व हृदय को विदीर्ण करने वाले संगीत तथा डीजे डांस में परिवर्तित हो चुका है। यही स्थिति दुर्गोत्सव की भी हो चुकी है। उसके बाद विसर्जन के समय 20-25 घण्टे तक रास्ता जाम करते हुए पुन: शोभायात्रा निकलती रहती है। हर सड़क पर, हर चौराहे पर, जगह-जगह मूर्ति स्थापना करने से अव्यवस्था तो उत्पन्न होती ही है साथ ही राहगीरों का भगवान को प्रणाम न करने पर भगवान अपमान भी होता है।

प्राचीन काल में देवी के शक्तिपीठों पर, बड़े-बड़े प्राण प्रतिष्ठित मन्दिरों में ही नवरात्रि में अत्यन्त भव्य उत्सव मनाया जाता था। दूर-दूर से लोग दर्शन करने जाते थे और हर घर में भी देवी का पूजन होता था । उसमें धार्मिक भावना रहती थी। उसी प्रकार से पूर्ण धार्मिक भावना के साथ और शास्त्रीय विधि विधान से सभी पर्व त्यौहार मनाए जाने चाहिए। पाखण्ड से दूर रहें।

-ओंकार नाथ कोष्टा

डीएम ने महाकाली दरबार में पूजा के बाद मन्दिरमाला कार्य तेज करने को कहा

गंगोलीहाट। जिलाधिकारी विनोद गोस्वामी ने महाकाली दरबार में पूजा करते हुए जनपद वासियों की सुख-समृद्धि एवं मंगलकामना की। मन्दिर में पुरोहित पं. दीप चन्द्र पन्त ने पूजा करवाई और पुजारी गोपाल रावल ने असीका प्रसाद दिया। यह दौरान उपजिलाधिकारी यशवीर सिंह भी थे। पूजा के उपरान्त डीएम ने मन्दिर समिति के पदाधिकारियों से भेंट की और मन्दिरमाला कार्य में धीमी गति से कार्य की शिकायत मिलने पर इस कार्य को तेज करने के लिये लोनिवि बेरीनाग के अधिशासी अभियन्ता को निर्देश दिये।

सुप्रीम कोर्ट में पुनर्विचार याचिका

पिथौरागढ़। प्रदेश में भड़के जनाक्रोश के बाद प्रदेश सरकार ने लाडली प्रकरण में सुप्रीम कोर्ट में पुनर्विचार याचिका दाखिल की है। पिथौरागढ़ जिलाधिकारी विनोद गोस्वामी ने यह जानकारी दी। इस याचिका का प्रारूपण एसपी सिटी हल्द्वानी प्रकाश चन्द्र आर्या ने सर्वोच्च न्यायालय में दाखिल किया। मामले में पैरवी के लिए उत्तराखण्ड सरकार ने देश के सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता को जिम्मेदारी सौंपी है। जिलाधिकारी ने लाडली के परिजनों से भेंट कर सरकार के प्रयासों की जानकारी दी। लाडली के पिता और ताऊ ने कहा कि हमने सरकार को पुनर्विचार याचिका दाखिल करने के लिये 4 अक्टूबर तक का समय दिया था। सरकार ने इससे पूर्व ही याचिका दाखिल कर दी। सरकार को ही अब याचिका स्वीकार करना होगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

आईटीआई अस्कोट खुशाल सिंह नाम से

अस्कोट। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान अस्कोट को अब शहीद खुशाल सिंह अधिकारी (सेना मेडल) के नाम से जाना जाएगा। शासन ने यह निर्णय लेते हुए इसका शासनादेश जारी किया। शहीद की 16वीं पुण्यतिथि पर आईटीआई अस्कोट में में श्रद्धांजलि सभा भी की गई।

लोहाघाट में पार्किंग स्थल का प्रस्ताव

चम्पावत। जनपद के खेतीखान और लोहाघाट में दो जगह पार्किंग स्थल का निर्माण होना है। इसके लिये ग्रामीण निर्माण विभाग ने 86 वाहनों को पार्किंग का प्रस्ताव शासन को भेजा है। विभाग ने खेतीखान में 42 वाहनों की पार्किंग के लिये 6.76 करोड़ और लोहाघाट एसडीएम कोर्ट में 44 वाहनों की पार्किंग के लिये 11 करोड़ का प्रस्ताव बनाया है।

नौलिंग महोत्सव समिति गठित

गणाई गंगोली। नौलिंग महोत्सव समिति का गठन करते हुए देवेन्द्र मेहता को अध्यक्ष व रवीन्द्र बोरा, दिनेश शर्मा, कमलेश बोरा, अवधेश पथनी को सचिव चुना गया। विधायक व पूर्व विधायक को समिति का संरक्षक बनाया गया है। साथ ही महोत्सव की रूपरेखा बनने लगी है।

सिंगाली के धनलेख मेले में उमड़ी भीड़

अस्कोट। सिंगाली क्षेख का धनलेख मेला धूम धाम से मनाया गया। धार्मिक आस्था से जुटने वालों लोगों की जबर्दस्त भीड़ देखने को मिली। दूर-दराज से मेले में आने वालों ने मनौती मांगी।

जौलजीवी बाजार में जाम से दिक्कत

जौलजीवी। कैलास यात्रा सहित सीमान्त क्षेत्र के तमाम वाहनों के गुजरने से प्रमुख पड़ाव जौलजीवी में काफी दबाव देखा जा रहा है। जौलजीवी बाजार में वाहनों के जाम से दिक्कत हो रही है। यात्रा मार्ग के वाहनों के अलावा बाजार में अनावश्यक रूप से खड़े वाहनों से कई बार दिक्कत होने लगी है। जौलजीवी एकता मंच ने टैक्सी स्टैण्ड निर्माण की मांग की है।

थल-लेजम सड़क में आवाजाही खतरनाक

थल। थल-लेजम सड़क में भूस्खलन के बाद से खतरनाक स्थिति बनी हुई है। मलबा हटाने में भी बहुत देर होने से लोगों ने रोष व्यक्त किया। भूस्खलन से इस मार्ग पर भारी मलबा जमा होने से रोड संकरी हो गई। इस खतरे से भरे मार्ग पर स्कूली बस सहित आवागमन को अन्य वाहन भी आ-जा रहे हैं लेकिन यह बहुत ही दिक्कत और जोखिम का काम है। सड़क मरम्मत व धंस चुकी सुरक्षा दीवार को तत्काल ठीक किया जाना जरूरी है।

पर्यटन विभाग व आईटीबीपी के सहयोग से ट्रांस हिमालयन ट्रेकिंग होगी

हल्द्वानी। देवभूमि उत्तराखण्ड की हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं में साहसिक पर्यटन की अपार सम्भावनाओं को देखते हुए वर्ष 2026 में ट्रांस हिमालयन ट्रेकिंग होना तय है।

यह ट्रेकिंग आदि कैलास से उत्तरकाशी तक 350 किमी की होगी। इसमें देश-विदेश के ट्रेकर्स को आमंत्रित किया जाएगा। इससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार व आजीविका के अवसर पैदा होंगे। साथ ही पर्यटकों के लिये आकर्षण बढ़ेगा।

पर्यटन सचिव धीराज गर्ब्याल कहते हैं कि सीएम के निर्देश पर राज्य में एडवेंचर टूरिज्म को बढ़ाने का हरसम्भव प्रयास हो रहा है। इसी में ट्रांस हिमालयन ट्रेकिंग भी शामिल है। इसकी तैयारियां शुरू हो चुकी हैं।

बताया जा रहा है कि सिनला दर्रा से होकर दारमा, मिलम, जोहार, मलारी, चमोली व उत्तरकाशी तक प्रस्तावित रूट से यह यात्रा होगी। सीमान्त में आवाजाही बढ़ने से सामरिक दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण कार्यक्रम है।

किच्छा पालिका चुनाव 2 माह में होगा!

नैनीताल। किच्छा नगर पालिका चुनाव और सिरौली कलां के पृथक चार वार्डों के मामले को मुख्य न्यायाधीश की खण्डपीठ ने एकलपीठ के पास भेज दिया है। किच्छा पालिका का चुनाव पिछले कुछ से लटका हुआ है। यहां अभी तक चुनाव नहीं हो पाए हैं। सरकार ने नगर पालिका की जिम्मेदारी प्रशासक को सौंपी है। आरोप है कि सरकार ने पहले सिरौलीकलां के चार वार्डों को किच्छा नगर पालिका में शामिल किया और बाद में इन वार्डों को पालिका से अलग कर दिया। हालांकि अदालत ने सरकार के इस कदम पर रोक लगा दी।

सरकार की ओर से कहा गया कि सिरौली कलां के चार वार्डों को मिलाकर सरकार अलग नगर पालिका का दर्जा दे रही है। सिरौली कलां की जनसंख्या 25000 से अधिक है और दो महीने के अन्दर चुनाव सम्पन्न करा लिए जाएंगे। यह भी कहा कि स्थानीय पूर्व विधायक के पत्र के आधार पर जिलाधिकारी की ओर से प्रस्ताव भेजा गया और इसके बाद यह कार्रवाई अमल में लाई जा रही है। सरकार की ओर से लोगों से आपत्तियां और सुझाव मंगाए गए और सभी का निस्तारण किया गया है।

निरस्त होंगे निशुल्क आवासों के आवंटन

रुद्रपुर। गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में निशुल्क आवास आवंटन प्रकरण पर सुनवाई करते हुए वित्त नियन्त्रक ने आवंटन को नियम विरुद्ध करार देते हुए निशुल्क आवास को रद्द कर दिया हे। साथ ही आदेशित किया कि निशुल्क आवास प्राप्त करने वालों से रिकवरी या फिर बेदखली भी की जाए। आदेश के बाद कब्जा धारकों में हड़कम्प मच गया है।

पन्तनगर विवि की स्थापना के बाद से ही प्रोफेसर और कार्मिकों को शुल्क लेकर आवास आवंटित किए जाने का प्रावधान था। वर्ष 2000 को भी एक आदेश पारित किया गया जिसमें कहा गया कि बिना सरकारी निर्धारित शुल्क के आवास आवंटित नहीं किए जाएंगे। बावजूद पिछले कुछ दिन पहले आदेश न मानते हुए विवि के कुछ अधिकारियों ने मनमानी की और 182 लोगों को निशुल्क सरकारी आवास आवंटित कर दिया था। विवि की वित्त नियंत्रण आभा गर्खाल ने आवंटित 182 आवासों के आवंटन को रद्द कर दिया।

पेपर लीक प्रकरण : जैमर तो थे 5-जी नेटवर्क पर नहीं लगा सकते लगाम

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग (यूकेएसएसएससी) स्नातक स्तरीय परीक्षा में सभी 445 केन्द्रों पर जैमर तो लगे थे लेकिन रोकने में नाकाम थे। इसे एक बड़ी तकनीकी खामी माना जा रहा है। जैमर 4-जी नेटवर्क रोकने वाले थे। विशेषज्ञों का कहना है कि ये 5-जी नेटवर्क को नहीं रोक सकते। आयोग ने स्नातक स्तरीय परीक्षा का पेपर लीक होने से रोकने के लिए पुख्ता इन्तजाम किए थे। केन्द्र सरकार के अधीन एक कम्पनी ने जैमर लगाए थे। पहले आयोग केवल सम्वेदनशील केन्द्रों पर इन्हें लगवाता था लेकिन इस बार सभी 445 केन्द्रों पर जैमर लगे थे। इनकी पड़ताल की तो पता चला कि ये सभी जैमर 4-जी नेटवर्क तक को रोकने वाले थे। विशेषज्ञों से बात की गई तो उनका कहना है कि ऐसे जैमर 5-जी नेटवर्क को रोकने में नाकाम हैं।

प्रदेश के ज्यादातर शहरों में 5-जी नेटवर्क चल रहा है। ये जैमर इलेक्ट्रानिक्स कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड (ईसीआईएल) की ओर से लगाए गए हैं। 4-जी नेटवर्क आमतौर पर 700 मेगाहर्ट्स, 1800 मेगाहर्ट्स, 2300 मेगाहर्ट्स बैंड पर काम करता है। 5-जी नेटवर्क इससे कहीं ज्यादा ऊँची फ्रिक्वेंसी बैंड (जैसे 3300 मेगाहर्ट्स, 3500 मेगाहर्ट्स, एमएम वेव : 24 मीगाहर्ट्स तक) पर काम करता है। जैमर एक तय फ्रिक्वेंसी रेंज को ही जाम करता है। लिहाजा, यह 5-जी नेटवर्क को जाम नहीं कर सकता।आयोग के सचिव का कहना है कि उनके पर्यवेक्षक ने मौखिक तौर पर परीक्षा केन्द्र के कक्ष-22 में जैमर न चलने की शिकायत की थी। रिपोर्ट आई तो उसमें कक्ष-9 में जैमर के काम न करने की बात सामने आई है। उन्होंने बताया कि मामले की जाँच की जा रही है। यह तो तय है कि जिस कक्ष से पेपर बाहर आया, वहाँ जैमर काम नहीं कर रहा था। आयोग ने इस सम्बन्ध में ईसीआईएल को पत्र भेजा है। कहा कि पूर्व में केन्द्र को पत्र भेजा था, जिस पर कैबिनेट सेक्रेटरी ने ईसीआईएल को 4-जी, 5-जी अपडेटेड जैमर लगाने के निर्देश दिए थे। हमारे अधिकतर परीक्षा केन्द्रों पर 4-जी जैमर लगे थे। कुछेक पर 5-जी जैमर थे। जहाँ परीक्षा का पेपर बाहर आया, वहाँ जैमर काम नहीं कर रहा था। इसकी जाँच की जा रही है। यूकेएसएसएससी की स्नातक स्तरीय परीक्षा का पेपर बाहर आना पहेली बना हुआ है। एक तो साफ हो गया कि जैमर काम नहीं कर रहा था लेकिन दूसरा सवाल यह है कि जब मोबाइल प्रतिबन्धित था तो भीतर फोटो कैसे खींचा गया। क्या किसी ने आरोपी खालिद की मदद की। आयोग ने मोबाइल समेत सभी तरह की इलेक्ट्रानिक डिवाइस पर सख्त प्रतिबन्ध लगाया हुआ था। सभी अभ्यर्थियों को सख्त जाँच से गुजरने के बाद ही परीक्षा केन्द्र के भीतर प्रवेश दिया जा रहा था। अपने पर्यवेक्षक की रिपोर्ट के आधार पर आयोग ने यह स्वीकार भी किया है कि परीक्षा कक्ष के भीतर से फोटो खींचकर बाहर भेजी गई है। सवाल यह उठ रहा है कि भीतर मोबाइल किसका था? क्या इसमें कोई और भी मिला हुआ है? पेपर भेजने का आरोपी अभ्यर्थी खालिद अभी तक पुलिस की पकड़ से बाहर है। आयोग भी इस सवाल का जवाब तलाशने में जुटा है कि खालिद की मदद किसने की। उत्तराखण्ड में पेपर लीक मामले से युवाओं में भारी नाराजगी दिखाई दे रही है। विगत दिवस स्नातक स्तरीय परीक्षा हुई थी, जिसके कुछ प्रश्न पत्र भी परीक्षा शुरू होने के तुरन्त बाद सामने आए। जिससे परीक्षा की पारदर्शिता पर सवाल उठे हैं।

धारचूला में पार्क बनाने का प्रस्ताव पारित

धारचूला। नगर पालिका की बोर्ड बैठक में विभिन्न प्रस्ताव पारित किये गये जिसमें नगर में पार्क निर्माण का प्रस्ताव मुख्य है। चैयरमैन शशि थापा की अध्यक्षता में हुई बोर्ड बैठक में ओम पर्वत, आदि कैलास यात्रा मार्ग में स्वागत गेट और सौन्दर्यीकरण के साथ ही स्थानीय लोगों के लिये आश्रम स्थल निर्माण, वार्डों में सोलर लाइट का प्रस्ताव भी हुआ। बैठक में ईओ सौरभ त्रिपाठी समेत सभासद मौजूद थे।

माधो सिंह जंगपांगी के नाम से कालेज

डीडीहाट। अटल उत्कृष्ट इण्टर कालेज डीडीहाट को अब स्वतंत्रता संग्राम सेनानी माधो सिंह जंगपांगी के नाम से जाना जाएगा। विधायक विशन सिंह चुफाल ने उनके नाम के शिलापट्ट का अनावरण किया। कहा कि स्वतंत्रता सेनानी हमारी धरोहर है।, उनका नाम सदैव अक्षुण बना रहे इसके लिये सरकार विद्यालयों के नाम सेनानियों के नाम पर रख रही है।

परिक्रमा

स्कूल भवन पर दरारों से खतरा

नाचनी/थल। शहीद गोविन्द सिंह मेहता रा.इण्टर कालेज होकरा का भवन 5 साल में ही खतरा बन चुका है। भवन में दरारों व पानी टपकने से इसकी गुणवत्ता पर सवाल उठ रहे हैं। कालेज में 195 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं। प्रधान ने शिक्षा विभाग से इस भवन की जांच की मांग उठाई है।

होमस्टे और होटल योग से जुड़ेंगे

चम्पावत। चम्पावत में योग संग होम स्टे और होटल जुड़ेंगे। इसके लिये उत्तराखण्ड सरकार ने योग नीति योग एवं वेलनेस सेन्टर और ध्यान केन्द्र स्थापित करने को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

डीएम मनीष कुमार ने बताया कि इच्छुक संचालकों को अपुणी सरकार पोर्टल पर पंजीकरण कराना होगा। पहाड़ी क्षेत्रों में योग वेलनेस एवं ध्यान केन्द्र खोलने पर अधिकतम 20 लाख या 50 फीसदी तक सब्सिडी और मैदानी क्षेत्रों के लिए अधिकतम 10 लाख या 25 फीसदी सब्सिडी दी जाएगी। बैठक में अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

क्या था कृष्ण के....

प्रथम पृष्ठ का शेष

उसे नियन्त्रित कर लिया। कृष्ण के बाल्य काल का सबसे अद्भुत काम गोवर्धन धारण करना रहा जिसके बहाने उन्होंने इन्द्र की पूजा बन्द करवा कर पहाड़ को अपनाने का पाठ पढ़ाया। पर्यावरण चिन्ता?

यहाँ थोड़ा रुकना जरूरी है। हम पर आरोप लग सकता है कि हम लोगो की भावनाओं का लाभ उठा कर कष्ण के बाल्य चमत्कारों का वर्णन कर रहे हैं। पर यह कैसे हो सकता है? अगर कृष्ण का विश्लेषण करना है तो उनके उसी जीवन पर नजर डालनी होगी जो हमें किताबों में मिलता है। कृष्ण हुए या नहीं हुए, वे इतिहासनायक है या हमारी कल्पना के स्वामी, ये सारे सवाल व्यर्थ के हैं। वे इतिहासपुरुष थे और जाहिर है कि वे हमारी कल्पना के सभी पोरों में मूर्ति बन कर पिघल चुके हैं। पोर-पोर भर चुका है।

इसलिए जैसी तस्वीर कृष्ण की मिलती है, उसी को उलटफेर कर टटोलना पहचानना होगा। कहाँ है कि किसी दूसरी जाति के पास ऐसा नायक जो कृष्ण का पासंग भी ठहरता हो? इसलिए कुरेदने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं है।

किशोर कृष्ण के जीवन में दो चीजें घटीं। दोनों एक-दूसरे के विपरीत है। एक रास, दूसरा कंसवध। रास में एक कृष्ण गोपियों के साथ खेल रहे हैं। कामक्रीड़ा और रासलीला में जो महीन फर्क है, हो सकता है उसी बिना पर गोपियों के साथ कृष्ण के सम्बन्धों की व्याख्या हो सकती हो। रास में अनेक गोपियों के साथ एक ही कृष्ण हैं। पर महारास में एक-एक गोपी के साथ एक कृष्ण हैं। इसके दार्शनिक भागवत विवेचन में डूबने की हमारी कोई मंशा नहीं है। पर सम्बन्धों की तीव्रता और घनता की ये अलग-अलग कोटियाँ या स्तर है। राधा के साथ उनके रिश्तों का आयाम ही अलग है। ठीक इसी रास महारास को बीच में छोड़ कृष्ण मथुरा जाकर कंस का वध करते हैं। बाधा दौड़ जीतने के अंदाज में वे पहले चाणूर और मुष्टिक नामक दो पहलवानों को ठिकाने लगाकर फिर कंस को बालों से खींच कर सिंहासन से गिराकर भरी सभा में उसका वध कर देते हैं।

महाभारत वाले कृष्ण से परिचय से पहले द्वापर के हमारे ये महानायक कई शादियाँ रचाते हैं। जरासन्ध के डर के मारे मथुरा छोड़ द्वारका पलायन करने के आसपास कृष्ण रुक्मिणी, सत्यभामा, जांबवती, कलिन्दी, मित्रविन्दा, सत्या, भद्रा और लक्ष्मण से शादियाँ रचाते नजर आते हैं। बाद के आलोचकों को कृष्ण के गोपी व रासप्रसंगों और इन आठ शादियों पर इतना मजा आया कि उन्होंने सोलह हजार पत्नियों की कहानियाँ सुनानी शुरू कर दीं। पर उनकी विशिष्ट पत्नियाँ दो ही रहीं- रुक्मिणी और सत्यभामा। इनमें से रुक्मिणी का स्थान सर्पोपरि है।

अब शुरू होती है महाभारत की स्पर्धा। जब अर्जुन दुर्योधन दोनों कृष्ण से युद्ध में सहायता लेने के लिए आए तो कृष्ण ने अपनी पूरी नाटकीयता के साथ अर्जुन को चुनने का पहला मौका इसलिए दिया कि वह उनके पैरों की ओर बैठा था और नींद खुलते ही कृष्ण ने पहले उसे देखा था। पर इससे पहले जरासन्ध वध शिशुपाल वध, चीरहरण के समय के प्रसंग घट चुके थे। जब लगा कि युद्ध लगभग अनिवार्य है तो कृष्ण ने एक आखिरी कोशिश दुर्योधन को समझाने की की। पर दुर्योधन ने कृष्ण को गिरफ्तार कर लेना चाहा तो कृष्ण ने उसे अपनी शक्ति दिखा दी और साफ बच निकले। युद्ध में कृष्ण ने हथियार न उठाने और सिर्फ अर्जुन का सारथिकर्म करने की प्रतिज्ञा की थी। पर जब उन्हें लगा कि अर्जुन भीष्म को मारने में हिचकिचा रहा है तो वे खुद एक टूटे रथ का पहिया उठा कर भीष्म को मारने दौड़े। अर्जुन उनके पाँव पड़ उन्हें लौटा लाए। फिर कृष्ण ने ही पाण्डवों को सलाह दी कि खुद भीष्म से उनके मरने का तरीका पूछा जाए। वैसा हुआ और शिखण्डी की मदद से भीष्म को मार दिया गया। द्रोण को मारने के लिए कृष्ण ने ही युधिष्ठिर जैसे गौछाप आदमी से नरो वा कुंजरो वा कहलवाया। जयद्रथ को अर्जुन के हाथों मरवाने के लिए कृष्ण ने ही सूर्यास्त का नाटक करवाया। रथ के धँसे पहिये को निकालने में व्यस्त व्यस्त कर्ण को मारने में अर्जुन कुछ संकोच कर रहा था। उसे कृष्ण ने ही निस्संकोच किया और कर्ण का सिर धड़ से अलग करवाया। इससे पहले घटोत्कच पर कर्ण को शक्ति चलवा कर कर्ण को कमजोर कर अर्जुन को बचाने की नीति कृष्ण ने ही रची। दुर्योधन की जाँघ पर गदा मार कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए कृष्ण ने ही भीम को उकसाया।

ये सब काम कृष्ण ने किए। अब हमारा सवाल वहाँ पर खड़ा होता है जहाँ पहुँचने के लिए हम इतनी देर से कृष्ण के पंचरंगी और सप्तलयी जीवन का खाका खींचे चले जा रहे थे। सवाल है कि कृष्ण के जीवन का क्या लक्ष्य था? ऐसा कौन सा उद्देश्य था जिसको पाने के लिए कृष्ण आजीवन इतने सारे काम करते रहे? वे क्या पाना चाहते थे, इतने सारे कामों के जरिए वे क्या कर दिखाना चाहते थे?

सवाल इसलिए उठता है कि जितने भी देवरूप हैं या विष्णु के अवतार कहे गए हैं, सबके साथ कोई न कोई स्पष्ट लक्ष्य जुड़ा है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव को क्रमशः जन्म, विकास और विनाश का दायित्व हमारे मिथककारों ने सौंप रखा है। वराहावतार का उद्देश्य रसातल में डूबी पृथ्वी का उद्धार करना था, कच्छपावतार ने समुद्रमन्थन का दायित्व निभाया। परशुराम दुष्ट क्षत्रियों को मारने घूमते रहे। राम के जीवन को पढ़ जाएँ तो सम्बन्धों और राजकाज का आदर्श रूप उनके कामों माध्यम से स्थापित होता नजर आता है। महात्मा बुद्ध ने वैदिक यज्ञों में बढ़ती हिंसा की समाप्ति की। शंकर ने बौद्ध धर्म से उत्पन्न आलस्य और नैष्कर्म्य को फिर से अद्वैत के आदर्श से स्थानापन्न कर जीवन में यथार्थ की दार्शनिक प्रतिष्ठा की पर कृष्ण क्या करना चाह रहे थे?

कृष्ण राजा नहीं बने। उन्होंने राज्य नहीं जीता। कोई बड़ी लड़ाई उन्होंने नहीं जीती। कोई बड़ा साम्राज्य उन्होंने खड़ा नहीं किया। पाण्डवों को राज्य दिलाना उनके जीवन का चरम लक्ष्य नजर नहीं आता। जितने राजा और राक्षसों का उन्होंने वध किया या करवाया, उसमें से किसी से उनकी व्यक्तिगत शत्रुता नहीं थी। किसी वध का कोई लाभ उन्हें नहीं मिला। वे सारा जीवन सारा भारत, विशेष कर पश्चिमोत्तर भारत घूमते रहे। हमेशा कुछ न कुछ करते रहे। पूरे परिदृश्य पर वे छाए रहे। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उनकी अग्रपूजा हुई, यानी अपने युग के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति माने गए। वे जहाँ गए, अपनी छाप छोड़ आए। पर इस सबसे उनका कौन सा लक्ष्य सधा, उन्हें क्या मिला? वे अकेले जंगल में पेड़ की छाया में उसके तने से पीठ टिका कर, चुपचाप बैठे थे और एक शिकारी के बाण से उनकी मृत्यु हो गई। यानी अन्त समय उनके पास न राज्य था, न परिवार, न कोई छोटी-बड़ी वस्तु। फिर किसलिए, क्या पाने के लिए वे ताजिन्दगी चलाकी करते रहे? वे लक्ष्यहीन नहीं थे। क्या कोई लक्ष्यहीन व्यक्ति इतना सक्रिय होता है, इतना लोकप्रिय और प्रभावशाली होता है? यहाँ तक कि सारे देश में, योद्धाओं और सम्राटों से भरे तब के भारतवर्ष में सिर्फ उन्हें अग्रपूजा के लायक माना गया। क्या लक्ष्यहीन व्यक्ति इतना सम्मान पा सकता है? पूर्णावतार माना जा सकता है? यानी वे लक्ष्यहीन नहीं थे, तो क्या था उद्देश्य?

कृष्ण ने गीता में एक जगह बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही है। अपने अवतार का उद्देश्य बताते हुए एक जगह कहते हैं कि जब-जब धर्म की ग्लानि होती है और अधर्म का अभ्युत्थान होता है, तब तब मैं खुद को इस धरती पर प्रकट करता हूँ। इसके मुताबिक तो कृष्ण जीवन का लक्ष्य धर्म की स्थापना करना होना चाहिए। इसलिए सवाल है कि किस तरह के या कौन से धर्म की स्थापना कृष्ण ने अपने जीवन में की?

(साभार नवभारत टाइम्स)

शारदीय नवरात्र पर भक्तों की भीड़

पूर्णागिरी धाम में रात्रि के समय भी दर्शन

टनकपुर। सुप्रसिद्ध पूर्णागिरी धाम में भक्तों की भीड़ है। शारदीय नवरात्र पर बड़ी संख्या में भक्तजन दूर-दराज से लगातार आ रहे हैं। ऐसे में मन्दिर समिति द्वारा रात्रि के समय भी दर्शन की सुविधा उपलब्ध कराई है। मन्दिर समिति के अध्यक्ष पं. किशन तिवारी ने बताया कि इस बार नवरात्र की शुरुआत से ही रात्रि दर्शन की व्यवस्था करवा दी गई थी। 21 जून से रात आठ बजे से सुबह छह बजे तक देवी दर्शनों पर रोक लगाई गई थी। धाम की प्राचीन धूनी स्थान में श्रीमद् देवी भागवत कथा भी जारी है। कथावाचक पं. गिरीशानन्द शास्त्री हैं। नवरात्र में दर्शकों की भीड़ को देखते हुए प्रशासन भी अलर्ट है। भारी बारिश से बाटनागाड़, हनुमानचट्टी सहित पूर्णागिरी धाम में जगह जगह सड़क और रास्तों के अलावा पेयजल, विद्युत लाइनों को नुकसान हुआ था, उन्हें दुरुस्त करवा दिया गया था।

आंवलाघाट मोटर पुल की मांग मुखर

गंगोलीहाट। जिला मुख्यालय पिथौरागढ़ से गंगोलीहाट की दूरी कम करने के लिये विगत 19 वर्षों से रामगंगा नदी पर आंवलाघाट में स्वीकृत मोटर पुल निर्माण की मांग मुखर है। पिथौरागढ़ के पूर्व पालिकाध्यक्ष जगत सिंह खाती इस मामले को लेकर तमाम अधिकारियों से भेंट करने के बाद प्रमुख सचिव लोनिवि तक को ज्ञापन दे चुके हैं। उन्हें आश्वासन मिला है कि शीघ्र कार्य आरम्भ होगा।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

छात्र संघ चुनाव की आड़ में अराजकता चिन्ता का विषय

नेतागर्दी का नशा व गुण्डई से माहौल खराब हो रहा है प्रदेश में

हल्द्वानी/रुद्रपुर/काशीपुर। उत्तराखण्ड में छात्र संघ चुनाव तो निपट गये लेकिन जिस प्रकार की गुण्डई इसमें शामिल हो चुकी है वह बेहद चिन्ता की बात है। यदि इसपर अंकुश नहीं हुआ तो एक अच्छे समाज के लिये यह जहर का काम करेगी। छात्रों का चुनाव होना एक बात है लेकिन इसमें जिस प्रकार से बाहरी दखल बढ़ता दिखाई दिया है और नेतागर्दी का नशा उतारा गया वह शर्मनाक है। इन चुनावों के समय कालेजों के भीतर व बाहर हुई मारपीट सहित छल कपट का असर आगे भी दिखाई देगा। पूरा माहौल सम्भालने में पुलिस प्रशासन के सामने भी चुनौतियां बढ़ती जा रही हैं। जगह-जगह हुई घटनाओं को पुलिस ने ठीक किया लेकिन यह सब हो ही क्यों रहा है, इस पर भले लोगों को एकजुट होना चाहिये। इस प्रकार की चर्चा भी समाज में होने लगी है।

छात्र संघ चुनाव के लिये अखाड़ा बने एमबीपीजी हल्द्वानी में अभाविप व एनएसयूआई के कार्यकर्ताओं का बार-बार भिड़ना बता रहा था कि इनके पीछे अन्य ताकत भी है। विद्यार्थियों की मारपीट में शामिल बाहरी तत्व भी चर्चा में रहे हैं। पुलिस ने लाठी फटकारते हुए कई बार इन्हें हटाया लेकिन प्रदेश की राजनीति में जिस प्रकार से तरलता की जगह दबंगता ने ले ली है उसका प्रभाव छात्र राजनीति में साफ दिखाई दे रहा है। चुनाव में अराजकता का माहौल यह था कि मारपीट के बीच मतदान का प्रतिशत मात्र 25 प्रतिशत ही हुआ। निर्विरोध चुनाव जीते उपसचिव पर हमला कर लहूलुहान कर दिया। फर्जी वोट डालते लड़कों को पुलिस ने पकड़ा।

रुद्रपुर में छात्रसंघ चुनाव नामांकन के दौरान जबर्दस्त मारपीट व फायरिंग हुई। इसके बाद से पूरे समय तक तनव रहा। सरदार भगत सिंह रा0 महाविद्यालय में अध्यक्ष पद के दोनों प्रत्याशियों के समर्थकों के झगड़ा हुआ था। पुलिस के अनुसार भीड़ में शामिल अर्जुनपुर निवासी जस्सी कचूरा ने दूसरे पक्ष्ज्ञ की ओर चमंचे से फायर किया। जबकि दूसरे पक्ष के लालपुर निवासी सतपाल लाहौरिया ने भी जस्सी कचूरा की तरफ फायर कर दिया। मामले में भाजपा पार्षद समेत 15 लोगों पर जानलेवा हमले व हाईवे जाम की प्राथमिकी दर्ज हुई।

काशीपुर के राधेहरि स्नातकोत्तर महाविद्यालय में नामांकन पत्र वापसी के समय एक गाड़ी में आए अज्ञात युवकों के साथ शाहरुख के समर्थकों की बहस हुई और दो पक्षों में मारपीट मची। इसमें मौ.कमरुद्दीन के सर पर चोट आई। मतदान दिवस पर भी छात्र गुट भिड़ते रहे। चुनाव के दौरान देर शाम किसी ने एक समाजसेवी की गाड़ी पर हमला कर दिया जिससे गाड़ी का शीशा टूट गया। कालेज गेट के बाहर प्रदर्शन हुआ।

छात्र संघ चुनाव की आड़ में हो रही गड़बड़ बड़ा सवाल है। नये व छोटे कालेजों में जहाँ निर्विरोध व चुपचाप विद्यार्थियों के प्रतिनिधि बन जाया करते थे वहाँ भी तमाशा होने लगा है। मुनस्यारी डिग्री कालेज में हुई झड़प की आंच अभी तक है। आरोप लगाया जा रहा है कि भाजपा नेता कालेज में घुसकर हस्तक्षेप करने लगे थे। विधायक हरीश धामी ने सख्त लहजे में कहा है कि यदि सत्ता के संरक्षण में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को धमकाने का काम किया गया तो अपनी रक्षा के लिये हमें मजबूरन कानून अपने हाथ में लेना पड़ेगा। विधायक का इतना कहने से ही समझ आ जाता है कि छात्रों के चुनाव में कितना बबाल मचने लगा है।

नई पीढ़ी बचने लगी है कालेज के माहौल से

उच्चशिक्षा के हालात देखते हुए नई पीढ़ी का रुख बदल चुका है। नई पढ़ी कालेज के माहौल से बचने लगी है। यदि पूरे सिस्टम की पड़ताल की जाए तो पता चलता है कि जिस तरह से डिग्री में प्रवेश के लिये युवाओं में उत्साह होता था वह अब कम होता जा रहा है। विश्वविद्यालयों के परिसरों से लेकर कालेजों में छात्र संख्या में गिरावट आई है। युवा वर्तमान में होने वाली नई तरह की पढ़ाई व अन्य प्रशिक्षणों की ओर रुख करने लगे हैं। इसके अलावा कालेज की अन्य गतिविधियों में भी युवाओं की रुचि कम है। बताया जाता है कि कहने को तो स्वच्छता, नशा उन्मूलन, तमाम तरह की प्रतियोगिता सहित कई आयोजन होते हैं लेकिन सब औपचारिकताओं में सिमटने लगे हैं। किसी कार्यक्रम का सरकारी आदेश होता है तो उसे निभाना सा होता है। फिर छात्र संघ चुनाव जैसे आयोजनों में भी रुचि उन युवाओं की ज्यादा है जो स्थानीय राजनीति से जुड़े हैं या जोश में आकर इससे शामिल हो जाते हैं। वैसे भी लिंगदोह कमेटी की सिफारिश लागू होने के बाद से छात्र संघ चुनाव का पुराना दौर पहले ही बन्द हो चुका है।

पेपर लीक मामले में सीएम के कहने पर फिलहाल थमा है तूफान

प्रदर्शनों का दौर, युवा सड़कों पर सरकार से कर रहे सवाल

सीएम ने संभाल ली बात

हल्द्वानी में बलपूर्वक उठाया

पुलिस के लिये बड़ी चुनौती

कर्मचारी जूझ रहे हैं

देहरादून/हल्द्वानी। उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की भर्ती परीक्षा के पेपर लीक मामले में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने भले ही बात संभाल ली है लेकिन तूफान मचा हुआ है। सीएम ने आन्दोलनरत युवाओं के बीच पहुँचकर सीबीआई जाँच की घोषणा की लेकिन प्रदेश में प्रदर्शनों का दौर थमा नहीं है। युवा आज भी सड़कों पर मांग कर रहे हैं कि यह सब क्या हो रहा है। देहरादून में विशाल प्रदर्शन के अलावा हल्द्वानी में आमरण अनशन कर रहे भूपेन्द्र कोरंगा को बलपूर्वक उठाया गया। पुलिस की सख्ती पर प्रदर्शनकारी भड़क गये। यह भी देखने में आ रहा है कि प्रशासन और पुलिस को जिस प्रकार से जूझना पड़ रहा है, वह उनके सामने बड़ी चुनौती है। एक ओर सत्ता पक्ष का दबाव दूसरी और खुल कर सड़क पर उतरे लोग। विपक्ष को यह बड़ा मुद्दा मिल चुका है तो वह आक्रामक होकर सरकार के विरोध में प्रदर्शन सहित सवाल कर रहा है। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत, कांग्रेस अध्यक्ष करन माहरा, नेता प्रतिपक्ष यशपाल पेपर लीक प्रकरण पर भाजपा सरकार को कटघरे में खड़ा करते हुए तमाम आरोप लगा रहे हैं।

पेपर लीक के भारी तूफान में सरकार को झुकना पड़ा और सीएम पुष्कर सिंह धामी ने प्रदर्शनकारियों को भरोसा दिलाया कि न्याय होगा। पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र रावत यूकेएसएसएससी की स्नातक स्तरीय भर्ती परीक्षा मामले में सीबीआई जाँच की बात पहले ही हो जानी चाहिये थी। भाजपा पार्टी के कुछ नेता कह रहे थे कि प्रदेश में माहौल खराब करते हुए मुख्यमंत्री को बदनाम करने की साजिश की जा रही है लेकिन विरोध के सुर तेज होते रहे। उत्तरकाशी में भाजपा नेता अभिषेक जगूड़ी ने पार्टी की नीतियों और कार्यप्रणाली से असन्तुष्ट होकर पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया, दून आकर प्रदर्शन किया। परेड ग्राउण्ड में धरना प्रदर्शन में सरकार से परीक्षा निरस्त करने व दोषियों को दण्डित करने की मांग के

दून सहित चारों और प्रदर्शन

त्रिवेन्द्र सीबीआई के पक्ष में

भाजपा नेता ने पार्टी छोड़ी

बेरोजगार संगठन का असर

अभिभावक भी आन्दोलन में

समर्थन में अभिभावक भी कूद पड़े। बेरोजगार संगठन के आन्दोलन का असर यह हुआ कि सीएम को उनके बीच आकर घोषणा करनी पड़ी।

21 सितम्बर को स्नातक स्तरीय भर्ती परीक्षा के दौरान हरिद्वार के एक केन्द्र में प्रश्न पत्र के तीन पन्ने बाहर आने के बाद सोशल मीडिया पर वायरल हुए थे। इस मामले में प्रदेश सरकार ने न्यायिक निगरानी में एसआईटी जांच कराने के लिये हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति बीएस वर्मा को नियुक्त किया था लेकिन न्यायमूर्ति वर्मा ने निजी कारणों व समय के अभाव के चलते सरकार की ओर दी गई जिम्मेदारी लेने में असमर्थता जताई। इसके बाद सरकार ने जांच के लिये सेवा निवृत्त न्यायमूर्ति यू.सी.ध्यानी की अध्यक्षता में एक एकल स्तरीय जाँच आयोग का गठन किया। फिलहाल प्रदेश में मामले का तूफान शान्त नहीं है। बेरोजगारों ने सरकार को दस दिन का समय दिया है कि वह भर्ती रद्द करे। युवाओं ने रणनीति तैयार करते हुए अगली रणनीति बनानी शुरू कर दी है।

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत
होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल
9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)